कलीसिया के लिए सज़्भाल (1 तीमुथियुस 3)

"मैं ... ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूं कि ... तू जान ले, कि परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खज़्भा, और नेंव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए" (1 तीमुथियुस 3:14, 15)।

परमेश्वर की योजनाएं और प्रबन्ध किसी व्यज़्ति विशेष के लिए नहीं बल्कि देह के रूप में पूरी कलीसिया के लिए हैं। पौलुस ने योग्य ऐल्डरों (3:1-7) और डीकनों (3:8-13) के द्वारा परमेश्वर की कलीसिया की सज़्भाल के लिए उसके नमूने से सज़्बन्धित निर्देश तीमुथियुस को दिए। उसने कलीसिया में बर्ताव (3:14, 15) और उद्धार में मसीही व्यज़्ति के विश्वास (3:16) के लिए परमेश्वर की योजना भी बताई।

पाठ 7: कलीसिया की सज़्भाल - रखवाले (3:1-7)

आज बहुत सी मण्डलियों में ऐसे विश्वासी पुरुषों की कमी महसूस की जाती है जो आत्मिक रूप से मसीह में इतने पज़्के हों कि वे परमेश्वर के झुंड की देखभाल कर सकें। बहुत से मसीही पुरुष यही मानते हैं कि वे प्रभु की देह में कभी ऐल्डर नहीं बन सकते हैं। *ज़्या प्रभु ने पुरुषों के इस तरह सोचने की इच्छा की थी?*

कलीसिया को आवश्यकता है कि बढ़ रहे चेलों में आत्मा का नयापन लगातार बढ़ता ही रहे। फिर, किसी भी मण्डली के इतिहास में थोड़े से समय के बाद, विश्वास में मज़बूत पुरुषों को ढूंढ़कर उन्हें चुनकर और बिना किसी संदेह या शक या भय के ऐल्डरों के रूप में नियुज़्त किया जा सकता है (देखिए प्रेरितों 6:1-6; 11:29, 30; 14:21-23)।[1]

ऐल्डरों की योग्यताएं कोई "नामुमकिन" शर्तें नहीं हैं। वे बपतिस्मा पाए हुए लोगों में से कुछ विशेष चुनिंदा लोगों के लिए नहीं हैं कि अधिकतर पुरुष जो उस कलीसिया के सदस्य हैं इस अध्याय और तीतुस 1:6-9 की उपेक्षा ही कर दें। मसीही व्यज़्ति को यह नहीं सोचना चाहिए कि उसके बड़ा होना बन्द कर देने और "औसतन मसीही" बनने से काम चल सकता है। *मसीह जैसा बनने के लिए और संसार में मसीह को सही ढंग से पेश करने के लिए हर मसीही के लिए इन बुनियादी योग्यताओं को बढ़ाना आवश्यक है।* बहुत से

लोगों को लगता है कि ऐल्डर बनने के लिए "सुपर संत" या बहुत पवित्र होना आवश्यक है, जबकि बाकी भाइयों को अध्ययन न करने, केवल उदासीनता में बढ़ने, अपनी व्यर्थ मूर्खताओं में लगे रहने की छूट है! ऐसा दृष्टिकोण, हमारी सोच पर चाहे कितना भी हावी ज़्यों न हो, लेकिन कलीसिया पर नियुज़्त करने के लिए पुरुषों को ढूंढ़ने के समय हमारे सामने आने वाली एक बड़ी कठिनाई है।

स्थिति का वर्णन किया गया (आयत 1)

ऐल्डर कौन होता है? मूल रूप में वह एक मसीही व्यज़्ति होता है जो अपने काम, समाज, देश, घर और आत्मिक क्षेत्रों में मसीह के स्वभाव में बढ़ा होता है। यदि एक दशक या इससे अधिक समय के बाद किसी मण्डली को अपने सदस्यों में से ऐसे पुरुष न मिलें, तो वहां केवल "संगठित करने" की समस्या ही नहीं है। ऐसी मण्डली को चाहिए कि वह अपने लोगों से "मसीही बनो" की आवश्यकता पर ज़ोर दे!

"जो आसान लगे उसे रख लो" वाला व्यवहार काम नहीं आएगा। यह कहने से कि "सब नियुज़्त पुरुषों में सारी की सारी योग्यताएं हों" बाइबल की शर्तें पूरी नहीं होंगी। एक ओर तो कोई यह चिल्लाता है, "इन योग्यताओं को पूरा नहीं किया जा सकता," जबकि इसके विपरीत दूसरी ओर "हमारे पास जो सबसे आसान है" के स्तर तक नीचे खींचकर इसी को पर्याप्त मानता है। इन दोनों किनारों के बीच ऐल्डर का भला काम करने की इच्छा करने वाले किसी भी व्यज़्ति के लिए बाइबल के नियम हैं। हमें ऐसे और पुरुषों की आवश्यकता है जो प्रभु की कलीसिया में इस महत्वपूर्ण काम की इच्छा करने वाले और उसके योग्य हों।

बुज़ुर्ग आत्मिक पुरुषों को मसीह में बालकों को बड़े होने में सहायता करनी चाहिए। यह कलीसिया के लिए ईश्वरीय योजना का एक भाग है (3:15; देखिए 1 पतरस 1:22–2:2; 2 कुरिन्थियों 5:17–21)। यह इसे करने वालों के लिए विशेष गारन्टी वाला गंभीर काम है।

लिंग

पौलुस ने "यदि कोई *पुरुष*" (3:1; NASB) लिखा है। इससे कुछ धार्मिक गुटों को जिनमें स्त्रियों को ऐल्डर नियुज़्त किया जाता है, जवाब मिल जाता है। यह एक ऐसा मामला है जिसमें अध्याय के बंटवारे पर ध्यान देना आवश्यक है। 1 तीमुथियुस 2:15 के बाद पौलुस ने स्त्रियों के बारे में बात करना बंद करके 1 तीमुथियुस 3:1 में पुरुषों के बारे में बात करनी आरज़्भ की। बेशक "पुरुष" शज़्द यूनानी बाइबल में नहीं मिलता है, परन्तु दो कारणों से स्पष्ट है कि पौलुस यहां पुरुषों की ही बात कर रहा था: (1) "अध्यक्ष" (यू.: *episkopon*) पुलिंग, (*episkopos* का) एक वचन कर्मकारक है, जिस कारण मसीह के प्रबन्ध के अनुसार रहकर किसी स्त्री के लिए "एक ही पत्नी का पति" (आयत 2) होना कभी सज़्भव नहीं होगा।

इच्छा

पौलुस ने कहा, "यदि कोई पुरुष ... चाहता है।"[2] चाहने वाले मन से उस पुरुष का

सवाल हल हो जाता है जो काम करने में *सक्षम* तो है लेकिन साफ इन्कार कर देता है, ''मैं अध्यक्ष नहीं बनना *चाहता।* '' निज़्न योग्यताओं में से किसी का भी सज़्बन्ध इच्छा या उत्साह से नहीं है। पौलुस ने आवश्यक चरित्र और योग्यताओं को बताने से पहले आवश्यक बात की ओर ध्यान ज़्यों दिलाया था। बाद में पतरस ने यह लिखते हुए कि एक ऐल्डर को ''दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार *आनन्द से* '' (1 पतरस 5:2) काम करने के बारे में इसी बात को अच्छी तरह समझा दिया। यदि नियुज़्त किया गया व्यज़्ति काम करने को तैयार नहीं है तो वह प्रभु के लोगों की उन्नति में एक बाधा है।

इससे दियुत्रिफेस जैसे किसी भाई का रास्ता साफ होने का, जो केवल धौंस ही जमाना चाहता हो (3 यूहन्ना 9-11) या याकूब और यूहन्ना की तरह, किसी पदवी को पाना चाहता हो (मरकुस 10:35-37) डर होना जायज़ है। पौलुस ने आयत 1 के अगले वाज़्यांश में इस समस्या को सुलझा दिया।

ज़िज़्मेदारी

आइए पौलुस के वाज़्य ''जो *अध्यक्ष* होना चाहता है (3:1) में यूनानी भाषा पर ध्यान देते हैं।[3] अंग्रेज़ी के अनुवादों में इस्तेमाल किया गया ''office'' शज़्द यूनानी बाइबल में नहीं मिलता है। सज़्मान न होकर यह एक *गंभीर ज़िज़्मेदारी* है। यह *पद या ऑफिस* नहीं बल्कि एक *काम* है! इस महान काम के लिए नये नियम में पौलुस के शज़्द को ''ऐल्डर या प्राचीन,'' ''पास्टर या रखवाला'' और ''चरवाहा'' के साथ ''अध्यक्ष या बिशप'' के रूप में (तीतुस 1:7) अदल बदलकर इस्तेमाल किया गया है। इन शज़्दों के आपसी सज़्बन्धों को ऐसे देखा जा सकता है:

अध्यक्ष या बिशप	ज़िज़्मेदारी व अधिकार
ऐल्डर (प्राचीन) या प्रेसबितर	उम्र और परिपज़्वता
पास्टर (रखवाला) या चरवाहा	सेवा तथा भावना

सेवा

पौलुस ने लिखा कि ''[अध्यक्ष] भले काम की *इच्छा करता*[4] है।'' ''इच्छा करता'' को ''काम'' शज़्द से जोड़ने पर, हर तरह के ''पद की इच्छा करने वाले'' के लिए कोई जगह नहीं रहती; और ''भले'' शज़्द ऐल्डर के काम के साथ जुड़कर धौंस वाली भावना को निकाल देता है। इसलिए, यह वाज़्यांश उस भाई की ओर ध्यान दिलाता है जो राज्य को बढ़ता देखने को इतना उत्सुक है कि उसकी इच्छा अपने उद्धारकर्ज़ा की सेवा में परिश्रम करने की होती है। इस व्यवहार को अगली योग्यताओं से मिला लें तो नतीजे में परमेश्वर के लिए महान कार्य करने वाला मिलेगा।

बताई गई योग्यताएं (आयतें 2-7)

अध्यक्षों के लिए इन योग्यताओं पर विचार करते हुए हमें सावधानी बरती जाए। झूठी

शिक्षा, मन में पहले से बैठे विचार, और मनुष्यों के बनाए नियम अक़्सर पवित्र आत्मा की शर्तों की जड़ खोदने का काम करते हैं। यह एक ऐसा विचार है जिसमें हमें चौकस रहना चाहिए कि लिखे हुए में न कुछ जोड़ा जाए और न उसमें से निकाला जाए!

''अध्यक्ष'' का उल्लेख करके पौलुस स्पष्ट बात कर रहा था। पौलुस एक व्यक़्ति के बारे में लिख रहा था न कि व्यक़्तियों के समूह के बारे में। हर व्यक़्ति में उन योग्यताओं का होना आवश्यक है जो पौलुस ने बताई हैं। इसके अलावा पौलुस ने कहा कि यह अध्यक्ष वैसा ही ''हो''[5] जिसका उसने वर्णन किया है। वह केवल सुझाव ही नहीं दे रहा था कि अध्यक्ष में ये गुण होने चाहिए बल्कि वास्तव में आज्ञा दे रहा था कि उसमें ये योग्यताएं होनी *आवश्यक* हैं। यह उसकी ज़िम्मेदारी है।

परन्तु हमें समझना चाहिए कि इनमें से कुछ योग्यताएं किसी दर्जे तक (जैसे ''विनम्र'' और ''पहुनाई करने वाला'') होनी आवश्यक हैं। भाइयों में केवल इसी दर्जे तक ये योग्यताएं नहीं होंगी। जो बात हमें समझनी चाहिए वह यह है कि योग्य भाई में ये गुण यहां तक होने चाहिए कि उसके जीवन में भी दिखाई दें। यदि किसी आदमी को लोग विनम्र कम कठोर ज्यादा, संयमी कम असंयमी ज्यादा, आदरयोग्य कम और अनादरयोग्य ज्यादा जानते हैं, तो वह मात्रा या डिग्री के हिसाब से अयोग्य है!।

इसमें दो अवलोकन किए जा सकते हैं। पहला यह कि हम पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए हर शज़्द या वाज़्यांश की परिभाषा दें। दूसरा, ऐल्डरों के लिए शर्तों और *कलीसिया के किसी भी सदस्य को ज़्या होना चाहिए* के बीच गंभीर समानता देखें!

जीवन के इन क्षेत्रों में कलीसिया के हर सदस्य में वही गुण होने आवश्यक हैं जो किसी ऐल्डर में होने चाहिए। स्वाभाविक ही है, कि किसी स्त्री को एक ही पत्नी का पति होने के लिए नहीं कहा जाता, और न मसीह किसी कुंवारे से स्वर्ग में जाने की आशा पाने के लिए पत्नी रखने की मांग करता है। परन्तु यदि कोई कुंवारा व्यक़्ति विवाह करना चाहता है तो उसे एक ही पत्नी का पति होना आवश्यक है, जैसा कि ऐल्डर को होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:1, 2; मज़्ती 19:5, 6)। किसी भी विवाहित दज़्पज़ि को जो बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेता है चाहिए कि उन बच्चों का पालन – पोषण ऐसे हो कि वे विश्वास करें, विश्वासी बनें और दुराचारी या विद्रोही होने का आरोप उन पर न लगे (तीतुस 1:6; इफिसियों 6:1–4)। इसके अलावा, मसीही व्यक़्ति नया चेला ही नहीं रहना चाहिए (इब्रानियों 5:11–14; 1 पतरस 3:15; 2:2)।

इन शज़्दों तथा वाज़्यों की परिभाषाओं को अन्य अनुवादों से मिलाने पर हमें ऐल्डरों की योग्यताओं की स्पष्ट समझ आ सकती है।

नकारात्मक गुण

''निर्दोष।''[6] बेशक प्रेरितों का और स्वयं यीशु का विरोध गड़बड़ कराने के लिए ही किया गया था (देखिए मज़्ती 12:2, 24; 15:2; लूका 13:14; प्रेरितों 17:6; 24:5), जबकि ईमानदारी से कोई भी उन पर गलत काम करने का आरोप नहीं लगा पाया था। इसी तरह

ऐल्डर को भी ऐसा जीवन जीने वाला व्यक्ति होना चाहिए जिसके विरुद्ध गलत काम करने का आरोप न लग सके।

''पियक्कड़ न हो।''[7] यहां केवल शराबी होने की ही मनाही नहीं की गई है। यदि ऐसा होता, तो बेशक हमें उसी विचार को व्यक्त करने वाला शब्द मिलता। यूनानी शब्द का अर्थ बहुत पीने वाला नहीं निकलता है। मूल भाषा में ''बहुत'' शब्द भी नहीं है। इसमें किसी ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत है जिसने नशा न चढ़ने के बावजूद, न पीने वालों के बीच शराब का इस्तेमाल करना अपनी आदत बना ली है।[8]

''मारपीट करने वाला न'' हो।[9] मारपीट करने वाला व्यक्ति मूलत: ''हाथ चलाने वाला'' होता है। यह ऐसा व्यक्ति होता है जो संकट के समय अपने ऊपर काबू नहीं रख पाता।

''न झगड़ालू'' हो।[10] ऐल्डर को झगड़ा और विवाद उत्पन्न करने वाले या उसे ''बढ़ाने वाले'' के रूप में नहीं जाना जाता।[11] ऐसा व्यक्ति ''शब्दों पर तर्क–वितर्क'' करता है ''जिन से कुछ लाभ नहीं होता'' (2 तीमुथियुस 2:14)। ऐल्डरों को निश्चय ही ऐसी सोच से दूर रहना चाहिए।[12]

''न लोभी हो।''[13] तीतुस 1:7 में पौलुस ने ''न नीच कमाई का लोभी'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया है। ऐसा व्यक्ति बेईमानी से धन कमाने को तैयार रहता है (1 तीमुथियुस 6:9)। उसके हाथों में प्रभु का धन देना परेशानी मोल लेना होगा। यहूदा इस्करियोती को देख लें (यूहन्ना 12:4–6)।

''नया चेला न हो।''[14] नया बना मसीही ऐल्डर बनने को एक बड़ी ज़िम्मेदारी के बजाय बड़ा पद समझ सकता है। परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त संदेशवाहक के रूप में, पौलुस इस बात को जानता था कि मसीह में किसी बालक के ऐल्डर बन जाने से वह अहंकार में आकर दण्ड का भागी बन सकता है। इसके अलावा नये चेले के पास बाइबल का ज्ञान या झुण्ड को सिखाने और चराने के लिए आत्मिक बुद्धि भी नहीं होगी।

''न हठी''[15] हो (तीतुस 1:7)। हठी व्यक्ति अपने से समझदार या बुद्धिमान भाइयों की इच्छाओं के बावजूद अपनी इच्छा को सबसे ऊपर रखता है। ऐसा व्यक्ति उन आत्माओं को बन्दी बनाकर जिन्हें मसीह ने आत्मिक विकास के लिए स्वतन्त्र किया है, या तो अच्छे विचारों में बाधा डालेगा या एक तानाशाह की तरह अधिकार करेगा।

''न क्रोधी''[16] हो (तीतुस 1:7)। उतावला, जल्दबाज व्यक्ति जो शीघ्र ही क्रोधित हो जाता है, ठण्डे दिमाग से न्याय नहीं कर सकता। वह कलीसिया की कठिन समस्याओं और अति संवेदनशील परिस्थितियों से धैर्य से नहीं निपट सकता।

सकारात्मक गुण

''एक ही पत्नी का पति।''[17] पहली नज़र में लगता है कि यह योग्यता अपना वर्णन स्वयं ही करती है, लेकिन इस पर अधिक चर्चा करने की आवश्यकता है। जे.डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने यह निष्कर्ष दिया है:

> ''एक ही पत्नी का पति'' अभिव्यज़्ति के तीन अर्थ निकाले जाते हैं: (1) पहली पत्नी की मृत्यु हो जाने के कारण दूसरी पत्नी वाला आदमी नहीं; (2) दो या अधिक पत्नियों का आदमी नहीं; (3) बाद वाला और ऐसा आदमी नहीं जिसकी कोई पत्नी न हो। ''पत्नी'' के साथ जुड़ी ''एक'' संज़्या निश्चित तौर पर एक से अधिक में कमी नहीं करती; इस विषय में कोई भेद नहीं है। यह बात कि इसमें दूसरी पत्नी वाला आदमी नहीं हो सकता, मैं नहीं मानता ज़्योंकि वह अब मर चुकी पत्नी का पति तो नहीं है इसलिए वह तो केवल एक ही पत्नी का पति है। ज़्या इसमें उस आदमी को शामिल नहीं किया जा सकता जिसकी कोई पत्नी न हो? मेरे ज़्याल से ऐसा ही होना चाहिए। एक आंख, एक हाथ, एक पैर वाले आदमी को बिना आंख, हाथ या पांव वाला आदमी नहीं कहा जाता! यदि उसका एक मित्र, एक घर, एक खेत है तो निश्चित तौर पर वह मित्र, घर रहित या खेत रहित नहीं है। इसी प्रकार यदि वह एक ही पत्नी का पति है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि उसकी पत्नी नहीं है।[18]

विवाह, तलाक, और पुनर्विवाह की स्थिति में किसी को चौथी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि ''ज़्या तलाक देने और पुन: विवाह करने का अधिकार देना पवित्र शास्त्र के अनुसार है?'' यदि है, तो वह ''एक स्त्री का पुरुष'' है। तलाक कब हुआ? ज़्या इससे निगरानी करने की उसकी सेवा प्रभावित होगी? ऐसे प्रश्नों पर विचार हो सकता है।[19]

''संयमी।''[20] परमेश्वर को पहल देने वाले आदमी को अपने से पहले दूसरों के बारे में सोचना चाहिए। रोमियों 14:21 पर विचार करें।

''सुशील।''[21] ऐल्डर बचकाना बातें करने वाले नहीं होने चाहिए (1 कुरिन्थियों 13:11; 14:20)। इसमें असंगत चतुराई या मज़ाक भी शामिल है। NASB वाली बाइबल में इसी यूनानी शज़्द का अनुवाद तीतुस 1:8 में ''विवेकी'' किया गया है।

''सज़्य''[22] (सुव्यवस्थित; ASV)। जीवन और काम – काज में अनियमित आदमी कलीसिया के आचरण को अनियमित बना सकता है। जिस कारण भटकने वाली भेड़ों को पहचानने, सदस्यों के गैर – ज़िज़्मेदाराना व्यवहार को अनुशासित करने, सदस्यों के बीच पैदा हुई दुर्भावना को दूर करने, भाइयों के बीच प्रयोग – क्षमता को बढ़ाने में असफलता हाथ लग सकती है। भौतिक मामलों में, रिकॉर्ड दुरुस्त नहीं किए जाएंगे और पत्र व्यवहार सही ढंग से नहीं हो पाएगा। कलीसिया के विकास का अध्ययन नामुमकिन होगा और अध्ययन के निर्धारित पाठ्यक्रम से मण्डली की आवश्यकताएं कभी पूरी नहीं होंगी। आर्थिक क्षेत्र में, बिलों का भुगतान नहीं होगा; क्षमता के अनुसार चंदा देने का कभी अध्ययन नहीं होगा और न ही भाइयों को कभी ऐसी चुनौती मिलेगी। हो सकता है कि आराधना भी भज़्ति और ज़य के साथ उत्साहित करने के लिए तैयार किए गए नमूनों के बजाय पुरानी लीक पर ही हो। सुसमाचार के प्रचार का दर्शन कभी विकसित नहीं होगा न ही किसी सुनियोजित, प्रभावकारी आऊटरीच के लिए समय मिल पाएगा। *अव्यवस्था या अनियमितता से कितना बड़ा नुकसान होगा!*

''पहुनाई करने वाला।''[23] ऐल्डर का घर शिक्षा पाने और परामर्श लेने की इच्छा रखने वालों के लिए सदा खुला रहना चाहिए। मण्डली की चरवाही करने के लिए, ऐल्डर को चाहिए कि उन्हें जानने के लिए सदस्यों के साथ समय बिताए। ओटो फोस्टर का अवलोकन है:

> ऐसा दर्जा पाने के लिए एक ऐल्डर के लिए अपने उदाहरण से दूसरों को प्रभावित करना आवश्यक है। पहुनाई करने वाला होने का अर्थ कलीसिया की सभाओं में आने वाले आगंतुकों के साथ मित्रतापूर्वक व्यवहार करना और मण्डली के नये सदस्यों में रुचि दिखाना है। पहुनाई करने का अर्थ केवल बाहर से आने वाले प्रचारक को ही नहीं बल्कि निर्बल सदस्यों को अपने घर बुलाना है जिससे उन्हें कलीसिया के बलवान सदस्यों के साथ संगति करके उत्साह मिल सके। इसका अर्थ उन लोगों की पहुनाई करना है जो मसीह की देह के अंग नहीं हैं, क्योंकि ऐसा करके वे मसीही घर और उस घर में रहने वाले के जीवन की सुन्दरता और भलाई को जान सकते हैं।[24]

''सिखाने में निपुण।''[25] परिभाषा से ही ''सिखाने में निपुण'' से सुझाव मिलता है कि ऐल्डर का इस क्षेत्र में कुछ हद तक निपुण होना आवश्यक है। इसके अलावा, वह सिखाने और शिक्षा देने की अपनी कला को बढ़ाने की इच्छा रखने वाला भी होना चाहिए (यिर्मयाह 3:14, 15; यहेजकेल 34:1-10)। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने ऐल्डर द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के प्रकार की समीक्षा की है:

> यह कौन सी शिक्षा है? इसे प्रचार नहीं कहा जा सकता; क्योंकि प्रचार तो कलीसिया के लिए नहीं बल्कि संसार के लिए होता है, और ऐल्डर के रूप में ऐल्डर का काम कलीसिया से सम्बन्धित था। स्पष्ट रूप में यह शिक्षा प्रेरितों को दी गई आज्ञा के दूसरे भाग वाली ही है: ''और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।'' फिर तो यहां तक ऐल्डरों का काम प्रेरितों को दिए गए काम से मेल खाता था, और जिस तरह यह काम किया जाता था हम उसका कुछ भाग प्रेरितों द्वारा किए जाने वाले काम से ले सकते हैं। इफिसुस के ऐल्डरों से बात करते हुए पौलुस उस नगर में अपने परिश्रम के सम्बन्ध में इसी ढंग का वर्णन करता है कि मैं ''जो - जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और *लोगों के सामने और घर घर सिखाने से* कभी न झिझका।'' यह बात वह उनके सामने एक मिसाल या उदाहरण के रूप में रखता है (प्रेरितों 20:35); और हमें भी सीखना चाहिए कि उन्हें सार्वजनिक तौर पर और घर घर सिखाने का निर्देश दिया गया था।[26]

''कोमल।''[27] यह ऐसे व्यक्ति को दिखाता है जो अपने बच्चे के प्रति एक मां की तरह, दूसरे की भावना का पूरी तरह से आदर करने वाला हो (1 थिस्सलुनीकियों 2:7-12)।

''अपने घर[28] का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लड़केबालों को सारी गंभीरता से अधीन रखता हो।'' ध्यान दें कि इसमें केवल बच्चों को ही शामिल किया गया है, जबकि

इसमें दूसरों को भी शामिल किया जा सकता था। ऐल्डर के लिए अपने घर का *प्रबन्ध*[29] अच्छी तरह से करने वाला होना आवश्यक है। इस मेहनती, चौकस, ध्यान रखने वाले, वश में रखने वाले और स्थिर रखने वाले दृष्टिकोण से, एक ऐल्डर के बच्चे ऐसे होने चाहिए जो सचमुच *अधीनता* में रहते हों।[30]

ऐसी अधीनता पूरी "गंभीरता"[31] से होनी चाहिए। ऐल्डर द्वारा पिता की तरह नियन्त्रण करने और उसके बच्चों द्वारा इस प्रकार मानने में तीतुस 1:6 से यह अतिरिक्त विचार जोड़ लें: "... जिनके लड़केबाले विश्वासी हों, और जिन्हें लुचपन और निरंकुशता का दोष नहीं।"

फिर, पौलुस की भाषा की समीक्षा करना भी लाभदायक है। "विश्वासी" शब्द पर ध्यान दें। क्रिया *pisteuo* अर्थात "विश्वास" की परिभाषा "सत्य... को स्वीकार करना, मानना, ...में भरोसा रखना" है।[32] यह विशेष तौर पर मसीह में विश्वास रखने और अपने आप को उसे देने के लिए लागू होता है। पवित्र शास्त्र से परिभाषित हो जाता है कि तीतुस 1:6 वाले लोगों सहित वास्तव में विश्वासी कौन हैं।

ऐल्डर के बच्चों का जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए कि उन पर दुराचार के आरोप लगते हों।[33] वे विद्रोही नहीं होने चाहिए।[34] ये दो शर्तें ऐल्डर के बच्चों के अधीनता में होने के सकारात्मक विचार के विपरीत अर्थात नकारात्मक को दिखाती हैं। NIV में कहा गया है, "ऐल्डर वह आदमी होना चाहिए ..." जिसके बच्चे विश्वास करते हों और उन पर जंगली और आज्ञा न मानने वाले होने का आरोप न हो।

ऐल्डरों और उनके बच्चों के बारे में प्रश्न और अवलोकन

1. क्या ऐल्डर के एक से अधिक विश्वासी बच्चे होने चाहिए?[35] जब पौलुस एक विशेष आदमी के लिए विशेष योग्यताएं बता रहा था, तो क्या "आवश्यकता के बहुवचन (बच्चे) में एकवचन समाविष्ट है" का नियम लागू करके ठीक कर सकते हैं? पवित्र शास्त्र की बात में बच्चों की *गिनती* पर ज़ोर दिया गया है या उनके *गुण* पर?

1 तीमुथियुस 5:16 जैसी आयत (जिसमें यूनानी या हिन्दी में तीतुस 1:6 जैसी मूल संरचना ही है) मुझे कायल करती है कि यहां पर ज़ोर बच्चों के *स्वभाव* अर्थात गुण पर है, ताकि विश्वासी बच्चे होने पर जिन पर दुराचार या विद्रोह करने का आरोप न हो आदमी को योग्य ठहराया जाए। (उत्पत्ति 21:7; मरकुस 10:29; लूका 20:29–31; 1 तीमुथियुस 5:4; 1 कुरिन्थियों 7:14 में "संतान" और "लड़के बालों" पर विचार करें।)

यह कहना कि जिसके जितने अधिक बच्चे होंगे उसमें उतनी ही अच्छे माता – पिता होने या निगरानी करने की कला भी होगी वास्तव में इस शब्द में जोड़ना है। क्या दस बच्चों के पिता में अगुआई करने की क्षमता दो बच्चों वाले आदमी से पांच गुणा अधिक होती है? क्या दो बच्चों के पिता में एक बच्चे के पिता से दोगुनी क्षमता होती है? यदि यह कोई मान्य मापदण्ड है तो बड़ी मण्डलियों के ऐल्डरों के छोटी मण्डलियों के ऐल्डरों से अधिक बच्चे नहीं होने चाहिए थे? ऐसे तर्क को कौन मानता है? ज़ोर किसी के बच्चे जनने की क्षमता पर

नहीं बल्कि परमेश्वर के लोगों में आत्मिक योग्यताएं बनाने में अगुआई करने पर है।

बाइबल कहीं भी कोई ऐसी बात नहीं कहती या ऐसा संकेत नहीं देती कि बच्चों की संज़्या से परिवार की योग्यता या पिता की निगरानी का स्तर तय होता है। यदि कोई पिता मसीह में अपने एक बच्चे का पालन – पोषण ईमानदारी से कर सकता है, तो ज़्या इससे यह पता नहीं चलता कि वह दो बच्चों का पालन – पोषण भी कर सकता था? यदि वह एक बच्चे को मसीह में नहीं ला सकता, तो इस बात का आश्वासन कौन दे सकता है कि वह दो या तीन को लाने में असफल नहीं होगा? संज़्या में हमें इतनी दिलचस्पी नहीं लेनी चाहिए कि स्वभाव या गुण को नज़रअन्दाज कर दिया जाए बल्कि बच्चों के चरित्र पर ध्यान देना आवश्यक है। हमें चाहिए कि *बड़े* परिवार होने पर इतना ध्यान न दें कि परिवार की *सुन्दरता* को देखना भूल ही जाएं!

2. *यदि किसी ऐल्डर के दो बच्चे हों जो विश्वासी हों परन्तु उनमें से एक अविश्वासी हो जाए तो ज़्या उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए।* पहली बात तो यह है कि उसे उस अविश्वासी बच्चे को वापस बाड़े में लाने के लिए हर उपलज़्ध साधन प्रार्थनापूर्वक अपनाना चाहिए, और भाइयों को भी चाहिए कि वे उसकी स्थिति को समझते हुए उसे समय दें। ज़्योंकि परमेश्वर ने हर व्यज़्ति को स्वतन्त्रता दी है, इसलिए हो सकता है कि अविश्वासी बालक उसे वापस लाने के प्रेमपूर्वक और पवित्र शास्त्र के अनुसार किए गए हर प्रयास का विद्रोह करे। यदि ऐसा होता है, तो ऐल्डर अपने बच्चे से अलग हो सकता है (व्यवस्थाविवरण 21:18–20; मज़्ी 18:15–18; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 14, 15)। ऐसे ऐल्डर ने प्रभु के सामने अपनी ईमानदारी साबित कर दी है। यदि वह उस उड़ाऊ पुत्र को मसीह में वापस ला सकता है, तो उसने सचमुच अपने आप को ऐसा व्यज़्ति सिद्ध कर दिया है जो हमारे प्रतिनिधि के रूप में उसकी चौकसी करने में सफल हुआ (इब्रानियों 13:17)।

यदि ऐल्डर का कोई बच्चा अविश्वास की स्थिति में रहता है और वह ऐल्डर न तो उसे मसीह में वापस लाने की कोशिश करता है और न ही इस विषय पर कोई दिलचस्पी दिखाता है, तो उसने मण्डली की आत्माओं की ओर से चौकसी रखने की अपनी अक्षमता साबित कर दी है। वह ऐल्डर होने के योग्य नहीं है और न ही उस पर इस काम को करने के लिए भरोसा किया जा सकता है। वह किसी दुखी परिवार को कैसे परामर्श दे सकता है और वे अपनी परिस्थितियों के लिए उस पर समझदारी से समाधान पाने के लिए कैसे भरोसा कर सकते हैं?

3. *यदि किसी आदमी के दो विश्वासी बच्चे हों और एक इतना छोटा हो कि वह अभी मसीही न बन सकता हो, तो ज़्या उसे ऐल्डर के रूप में चुने जाने पर विचार किया जा सकता है?* यकीनन ही इस भाई के बच्चे विश्वासी हैं और उन पर दुराचार या विद्रोह का आरोप नहीं है। घरेलू स्तर पर वह योग्यताओं को पूरा करता है। यदि उसे चुनकर नियुज़्त नहीं किया जा सकता, तो उस भाई को जिसके दो विश्वासी बच्चे हैं, उसे ऐल्डर के रूप में चुना जाता है और फिर उसकी नियुज़्ति के दो माह बाद उसकी पत्नी गर्भवती हो जाती है, तो ज़्या होना चाहिए? ज़्या उसे सात माह बाद अगले दस या बारह वर्षों (या इससे अधिक) तक अर्थात जब तक उसका सबसे छोटा बच्चा आज्ञा नहीं मानता (अर्थात बपतिस्मा नहीं लेता), त्यागपत्र दे देना चाहिए?

4. *जब किसी ऐल्डर के बच्चे उसके साथ न रहते हों तो क्या इसके लिए उसे ज़िम्मेदार माना जाना चाहिए? क्या वह उनके विश्वासी न रहने की स्थिति में भी (किसी दूसरी जगह रहते हुए) सेवा ईमानदारी से कर सकता है?* पहले तो 3:4 में "अपने घर का" की परिभाषा पर ध्यान दें। इसका अर्थ, अन्य बातों के साथ "एक परिवार, घराने ... एक व्यक्ति की संतान के सब लोग" है। यह परिभाषा "एक छत के नीचे" रहने वाले बच्चों के विचार से कहीं आगे है। दूसरा, 1 तीमुथियुस 5:3-5 किसी बच्चे के अपने घर का निवास स्थान छोड़ जाने के बाद भी लागू होगी। बुनियादी बात यह है कि हम अपने परिवार के सदस्यों के प्रति विशेष दायित्व को स्वीकार करें (जैसे कोई बीमारी या त्रासदी आने पर), वे चाहे हमारे साथ रह रहे हों या नहीं। तीसरा, नीतिवचन 22:6 में एक सिद्धांत मिलता है जिस पर विचार करना आवश्यक है: यदि कोई बालक बाद में विश्वासी नहीं रहता, तो क्या इसका कारण घर से मिली *शिक्षा* में कमी है? अपने बच्चों को शिक्षा देना "यह देखने से कि वे आराधना सभाओं में जाते हैं" कहीं अधिक है। चौथा, यदि किसी ऐल्डर के बच्चे अविश्वासी हैं, तो क्या विश्वासी लोग अपनी पारिवारिक समस्याओं को बताने के लिए उस पर भरोसा करेंगे? क्या वह उस काम को कर सकता है जिसके लिए प्रभु ने उसे अलग किया है? मेरी अपनी मान्यता यह है कि इन परिस्थितियों में व्यक्ति अयोग्य हो जाता है और वह ऐल्डर को दिए जाने वाले काम को पूरा करने में सक्षम नहीं है।

उठने वाले कई दूसरे प्रश्नों का उत्तर देने में इन बातों से सहायता मिल सकती है। आइए हम पौलुस की स्पष्ट सूची में वापस आते हैं।

"कलीसिया के बाहर के लोगों में सुनाम"[36] होना। इसका अर्थ कलीसिया के बाहर और संसार के लोगों में उसकी अच्छी प्रतिष्ठा या अच्छा नाम होना है। किसी ने कहा है, "दागदार अतीत या बुरी ख्याति वाला आदमी अपनी गलतियों से मन फिरा सकता है, अपना जीवन बदलकर परमेश्वर के साथ सदा तक रहने के लिए जा सकता है यदि वह विश्वासी रहे, परन्तु वह कलीसिया में ऐल्डर होने की योग्यता नहीं पा सकता।"[37] *इस कथन से आगे न निकलने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।* उदाहरण के लिए, 1 पतरस 5:1 से हम जानते हैं कि पतरस एक ऐल्डर या प्राचीन था। परन्तु उसकी ख्याति हमेशा निष्कलंक नहीं थी क्योंकि अतीत में उसने इस बात से इन्कार किया था कि वह प्रभु को जानता है (मत्ती 16: 22, 23; 26:69-75; यूहन्ना 18:10, 11)।

"भलाई का चाहने वाला"[38] (तीतुस 1:8)। यदि कोई भलाई से प्रेम करता है, तो वह भलाई को चाहेगा भी। स्वयं इसकी इच्छा करके वह दूसरों को भी इसमें उत्साहित करेगा।

"न्यायी"[39] (तीतुस 1:8)। एक ऐल्डर के सामने बहुत से व्यक्तित्व, विभिन्न प्रकार की क्षमता वाले लोग और बहुत सी समस्याएं आएंगी। अधिकार और काम सौंपने में उसे कितना न्याय-संगत और निष्पक्ष होना होगा! कलीसिया के अनुशासन के विशाल दायरे में, एक ऐल्डर का न्याय बिना किसी पूर्व धारणा, भावना या स्वार्थ के होना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 6:4-9)।

"पवित्र"[40] (तीतुस 1:8)। पवित्र बनने की यह कितनी बड़ी चुनौती है! विचारों और काम में पवित्रता ऐल्डर के काम को करने की कोशिश करने वाले के लिए सचमुच एक परिसज़्पज़ि है (1 पतरस 1:15, 16; लैव्यव्यवस्था 11:44, 45; 19:2; मज़ी 5:48 भी देखिए)।

"जितेन्द्रिय"[41] (तीतुस 1:8)। अपने आप पर नियन्त्रण न रखने वाले व्यज़्ति का आदर लोग अधिक देर तक नहीं करते। एक ऐल्डर को बहुत से व्यज़्तित्वों का सामना करना पड़ता है और इस सज़्बन्ध में हो सकता है कि उसे परीक्षा भी देनी पड़े।

सार में

ज़्या ऐसा हो सकता है कि किसी ऐल्डर में इन योग्यताओं में से कुछ योग्यताएं *न* हों लेकिन फिर भी वह प्रभु द्वारा उसे दिए गए काम को पूरा करने के योग्य हो? ज़्या कोई योग्यता होना असज़्भव है?

हमें व्यज़्ति के अनुकूल योग्यताएं बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, ज़्योंकि व्यज़्ति के लिए इन योग्यताओं को पूरा करना आवश्यक है। परमेश्वर ने मापदण्ड ठहरा दिया है और हाय उस पर जो उनमें कुछ जोड़ता या उसमें से कुछ निकालता है।[42] "यदि जोड़ तोड़ करके, अन्त में किसी व्यज़्ति के अनुकूल ही बनाना है, तो ऐसे व्यज़्ति की ओर से किए जाने वाले अपने जीवन में किसी सुधार के सभी प्रेरक निकाल लिए गए हैं। उसे लगेगा कि वह जैसा है वैसा ही अच्छा है। परमेश्वर ऐसा न करे।"[43]

पवित्र शास्त्र में ऐल्डरों को करने के लिए दिए गए काम का और अध्ययन करना[44] और उसे उन योग्यताओं से मिलाना जिन पर हमने ध्यान दिया है अच्छी बात होगी। कितनी सुन्दर एकता दिखाई देती है! अपने गंभीर काम को करने के लिए ऐल्डरों में ये योग्यताएं होनी आवश्यक हैं। परमेश्वर की बुद्धि तो स्पष्ट है। पवित्र आत्मा ने सेवा करने के लिए उपयुज़्त आदमी को दूसरे लोगों में से कितनी अच्छी तरह निकाला है! हमें चाहिए कि हम उस ईश्वरीय निर्देशिका को मानें ताकि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण लोगों को ही हमारे ऊपर निगरानी करने और सेवा और आत्मिकता की और ऊंचाइयों में हमारी अगुआई करने के लिए चुना जाए (प्रेरितों 20:28; इब्रानियों 13:7, 17)।

पाठ 8: कलीसिया के लिए सज़्भाल - डीकन (3:8-13)

हमने देखा कि कलीसिया में निरीक्षक होने आवश्यक हैं। किसका और ज़्या निरीक्षण होना चाहिए? पौलुस ने देह में व्यवहार के और विवरण देते हुए विशेष सेवकों और विशेष सेवा का परिचय दिया है।

नये नियम में यूनानी शज़्द diakonos (डायाकोनोस) का अनुवाद "डीकन" (3:8; फिलिप्पियों 1:1), "सेवक" (मज़ी 23:11; इफिसियों 6:21) हुआ है। सेवा किसी भी प्रकार की हो, लेकिन विचार हर जगह एक ही है: *इसका अर्थ एक आदमी का दूसरों के*

साथ, के लिए, और के अधीन काम करना है। परमेश्वर के वचन में सेवा करने और सेवक होने का विचार सोलह सौ बार मिलता है जो प्रेम से चार गुणा और विश्वास से पांच गुणा अधिक है। बिना सेवा किए प्रेम या विश्वास का कोई वास्तविक प्रदर्शन नहीं हो सकता।

बताई गई योग्यताएं (आयतें 8, 10, 12)

व्यापक अर्थ में, कलीसिया का हर सदस्य प्रभु का सेवक है। परन्तु कुछ लोगों को प्रभु के काम में निरन्तर और विशेष दायित्व पूरे करने के लिए अलग किया जाता है। रॉन डी. स्मदरमैन लिखता है:

> की जाने वाली सेवा की किस्मों का संकेत देने के लिए नये नियम में कई यूनानी शज़्दों का इस्तेमाल किया गया है। *Doulos* (डौलोस) एक साधारण दास के लिए इस्तेमाल किया गया। *Latros* (लैट्रॉस) का अर्थ भाड़े पर लिया गया सेवक है। *Leitourgia* (लेटोरजिया) से सरकारी कर्मचारी की सेवा के बारे में पता चलता है। डॉज़्टरी सेवा को *therapeo* (थैरेपियो) से व्यज़्त किया जाता है। *Diakonia* (डायाकोनिया) प्रेम से की जाने वाली सेवा है। ''सेवकाई'' (सेवा) के लिए इन में से कोई भी शज़्द चुना जा सकता था, परन्तु अन्तिम शज़्द *डायाकोनिया,* शायद इसलिए चुना गया ज़्योंकि केवल यही वह शज़्द है जो स्वेच्छा से की जाने वाली सेवा को व्यज़्त करता है। इस शज़्द का इस्तेमाल कई संदर्भों में हुआ है। अर्ड्ट और गिंगरिक ने नये नियम में 37 जगह इसे पाया। इसके सजातीय शज़्द, *diakonein* और *diakonos* 34 और 30 बार आते हैं।[45]

विशेष सेवाओं के लिए अलग किए गए पुरुषों को ''डीकन''[46] या सेवक कहा जाता है, और 1 तीमुथियुस 3:8-13 में इन विशेष सेवकों की योग्यताएं बताई गई हैं। प्रत्येक योग्यता के अर्थ को समझना आवश्यक है। इसलिए आइए पौलुस द्वारा दी गई सूची की समीक्षा करें:

''गंभीर।''[47] सज़्मान, गंभीरता और प्रतिष्ठा की धारणाओं को मिलाकर हम एक ऐसे आदमी का चित्र बना सकते हैं जो प्रभु के काम के प्रति अपने बर्ताव में ढीला या अगंभीर नहीं है। उसे इस बात का अहसास है कि प्रभु का काम बहुत ही महत्वपूर्ण है।

''दो रंगी [नहीं]।''[48] किसी भी डीकन को उपस्थित लोगों को खुश करने के लिए दोगला नहीं होना चाहिए। ऐल्डरों के अधीन सेवा करते हुए दूसरे लोगों की सेवा के लिए पहुंच करने वाले डीकन पर दोनों पक्षों को प्रसन्न करने की कोशिश करने की परीक्षा पड़ सकती है!

''पियज़्कड़ [नहीं]।''[49] डीकन का मन मय में इतना नहीं डूबा होना चाहिए कि उसके मन पर मय का ही नियन्त्रण हो जाए। यह निर्देश एक ऐसे समाज में दिया गया था जिसमें पौलुस तीमुथियुस को पेट के लिए थोड़ा दाखरस लेने की आज्ञा दे सकता था (देखिए 5:23)। ऐसे समाज में जिसमें अल्कोहल पीने से किसी का प्रभाव खत्म हो सकता है या दूसरे पीने के लिए उत्साहित हो सकते हैं, रोमियों 14:21 को मार्गदर्शक मानना चाहिए!

''नीच कमाई का लोभी न हो।''[50] यहूदा इस्करियोती के मामले में प्रभु के काम में इस

व्यवहार का फल आसानी से देखा जाता है (यूहन्ना 12:1-8; मत्ती 26:14-16)। व्यापार में धन की इच्छा आज या कल आदमी को जकड़कर उसकी प्रतिष्ठा का नाश कर देगी और इससे प्रभु की कलीसिया में एक डीकन के रूप में उसका प्रभाव खत्म हो जाएगा।

"विश्वास के भेद[51] को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें।"[52] यहां उस आदमी की बात है जो ईमानदारी से 2 तीमुथियुस 1:14 और 1 तीमुथियुस 3:15 के पिछले भाग को पूरा करेगा:

> पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी थाती की रखवाली कर (2 तीमुथियुस 1:14)।
>
> कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खम्भा, और नींव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:15)।

डीकन को "मोती रखने वाली रत्न पेटी" कहा गया है।[53] वह सचमुच इस बात को समझता है कि सुसमाचार एक भण्डार है। वह दिखावे या लोगों को धोखा देने के लिए नहीं बल्कि निष्ठा से इसके प्रति सम्मान रखते हुए इसे सम्भालता और इसके अनुसार जीवन बिताता है।

"निर्दोष।"[54] डीकन उन भाइयों के जैसे होने चाहिए जिन्हें प्रेरितों 6:3 में विशेष सेवा के लिए ठहराया गया था:

> "सुनाम" - लोगों की नज़र में सही
> "पवित्र आत्मा से परिपूर्ण" - परमेश्वर की नज़र में सही
> "बुद्धि से परिपूर्ण" - काम में सही

आयत 10 के पहले भाग पर ध्यान दें। "निर्दोष" पाए जाने पर ही "*परखे*"[55] जाने का काम पूरा होता है। यह एक बहुत गंभीर काम है।

"एक ही पत्नी के पति हों।" यह योग्यता तीन मांगें करती है: (1) कि उसकी दो या अधिक नहीं बल्कि एक ही पत्नी हो, (2) कि उसका *एक* ही पत्नी से विवाह हुआ हो, (3) कि वह उस एक के प्रति निष्ठावान हो। प्रभु का उचित प्रतिनिधित्व करने के लिए, किसी कामुक आदमी पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

"अपने घरों का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों।" डीकन के लिए अपने घर का "प्रबन्ध"[56] करने वाला ही नहीं बल्कि "अच्छा"[57] प्रबन्ध करने वाला होना ज़रूरी है। यहां एक ऐसे आदमी को दिखाया गया है जो अपने घर को शैतान से *सुरक्षित* रखने और बचाने का काम अच्छी तरह से कर सकता है। वह *उत्तम, भले* और *सम्माननीय* ढंग से उस घर को *बनाए रखने* के लिए उसकी *सम्भाल करना* और *ध्यान रखना* अपनी *आदत* बना लेता है! ऐसा आदमी कितना अच्छा पति और पिता बन जाता है!

विशेष सेवक स्त्रियां (आयत 11)

आयत 11 में पौलुस ने स्त्रियों के विषय में अचानक कुछ विशेष बातें जोड़ दीं:

> इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गंभीर होना चाहिए; दोष लगाने वाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हों।

अलग – अलग अनुवादों में प्रश्न उठाए गए हैं कि ये स्त्रियां[58] कौन हो सकती हैं। किनके लिए ये शर्तें दी गई थीं ? तीन विचार दिए गए हैं:

1. यह बात डीकन की पत्नियों के लिए कही गई है। (किंग जेज़्स वर्ज़न में ''इसी प्रकार उनकी पत्नियां ...'' कहा गया है।)
2. यह ऐल्डरों और डीकनों दोनों की पत्नियों के बारे में कहा गया है।
3. यह उन महिलाओं के बारे में है जो सेवकों की तरह ऐसी ही सेवा करती थीं, जैसे रोमियों 16:1 में फीबे। (''सेविका'' के लिए RSV में ''डीकनेस'' लिखा गया है। यूनानी शज़्द *diakonon* है, जो ''डीकन'' के लिए *diakonos* से कर्मकारक, एकवचन, स्त्रीलिंग है।)

पौलुस ने चार विशेष योग्यताएं दी हैं। ये महिलाएं ''गंभीर'' होनी चाहिए (जैसे 3:8 में दिया गया है, जो सज़्माननीय और प्रतिष्ठित आचरण को सुनिश्चित करेगा।) वे ''दोष लगाने वाली न हों।''[59] इसके स्त्रीलिंग रूप में पौलुस ने ''शैतान'' के लिए शज़्द का इस्तेमाल किया जो सारी बुराई का बल है। इस कारण, रॉबर्टसन ने ''दोष लगाने वाली'' स्त्रियों को ''चुड़ैलें'' कहा है।[60] यूहन्ना 8:44 पर ध्यान दें।

वे ''गंभीर'' हों।[61] यह उन स्त्रियों को दिखाता है जो अपनी नेकनामी चाहती हैं। अन्तत: उन्हें ''सब बातों में ईमानदार'' होना चाहिए। इसमें सब बातें आ जाती हैं।

डीकन स्त्रियां? (1 तीमुथियुस 3:11)[62]

इस आयत को (1) डीकनों की पत्नियों, (2) ऐल्डरों तथा डीकनों की पत्नियों, या (3) डीकन स्त्रियों के लिए प्रासंगिक बनाते हुए ए. सी. हार्वे ने इसके तीन सज़्भावित अर्थ बताए हैं।[63] बहुत से आधुनिक टीकाकारों की तरह, हार्वे ने तीसरे अर्थ का विकल्प दिया है, परन्तु इस टीकाकार को विश्वास है कि तीसरा अर्थ गलत है।

यदि वे महिलाएं जिनका यहां उल्लेख है डीकन होतीं, तो पौलुस उन्हें डीकन ही कहता, जो कि निश्चित रूप से उसने नहीं कहा; और इसके अलावा, अगली ही आयत में उसने कहा कि ''सेवक (अर्थात डीकन) एक ही पत्नी के पति हों,'' जो इस पद पर सेवा करने वाले के रूप में स्त्रियों के होने की किसी भी सज़्भावना को नकार देता है।

ऑथोराइज़्ड वर्ज़न तथा नैसले ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट दोनों में इस आयत में ''स्त्रियों'' के बजाय ''पत्नियों'' शज़्द का अनुवाद किया गया है, जो बिना किसी संदेह के

सही है। यह आरोप लगाया जाता है कि यूनानी भाषा में ''स्त्रियों'' शज़्द के कई अर्थ हैं, और यह सही हो सकता है; परन्तु संदर्भ में इस शज़्द का अर्थ पत्नियों ही है। इसे ''डीकन स्त्रियां'' समझना परमेश्वर के वचन का उल्लंघन है। यह आयत किसी स्त्री के डीकन होने के बारे में बिल्कुल नहीं कहती; और इस मान्यता का कि यह कहती है यह अर्थ होगा कि ऐल्डरों और डीकनों की पत्नियों के लिए *कोई योग्यताएं न बताना* एक ऐसी गलती है जिसे पौलुस प्रेरित के विरुद्ध आरोप लगाने का किसी मनुष्य को अधिकार नहीं है। इन अधिकारियों की पत्नियों की योग्यताओं पर इस आयत को बिल्कुल आधिकारिक तौर पर माना जाना आवश्यक है। गलत किस्म की पत्नी से किसी भी ऐल्डर या डीकन का विनाश हो सकता है; इसलिए यहां पर दी गई योग्यताओं को कलीसिया के अधिकारियों के पूरे नये वर्ग पर लागू करने का अर्थ पौलुस को एक बहुत बड़ी गलती करने का दोषी ठहराना है।

लेकिन ज़्या फीबे को सेविका (अर्थात डीकनेस) नहीं कहा गया (रोमियों 16:1) ? हां, कहा गया है ? लेकिन पुलिस के लोगों को भी तो परमेश्वर के सेवक अर्थात डीकन कहा गया है (रोमियों 13:4), ज़्योंकि दोनों ही जगह वही यूनानी शज़्द है (केवल लिंग का अन्तर है)। ... इस सज़्बन्ध में, यह ध्यान देना उचित है कि यदि पौलुस का अर्थ इन स्त्रियों को ''सेविकाएं'' या डीकनेस ठहराना होता, तो निश्चय ही उसे इस शज़्द का भी पता होता और इस आयत में वह उन्हें उनके पद के अनुसार बुलाता। नये नियम के शज़्द ''प्रेरित'' का इस्तेमाल आधिकारिक और सीमित दोनों अर्थों में और बरनबास और सीलास जैसे लोगों पर लागू करते समय मुज़्य और सामान्य अर्थों में भी किया गया है, जो वास्तव में ''प्रेरित'' नहीं थे। यहां पर विचार यह है कि फीबे के लिए प्रयुज़्त शज़्द ''सेविका'' या डीकनेस भी वैसा ही है और इसका अर्थ यह नहीं है कि वह प्रभु की कलीसिया में आधिकारिक तौर पर डीकन नियुज़्त थी। यह याद रखा जाना चाहिए कि सेविका यूनानी शज़्द के लिए ''सेवक'' का अनुवाद है और सदियों तक अनुवादक लोग कलीसिया के पद के लिए केवल ''डीकन'' शज़्द का ही इस्तेमाल करते रहे। इसी तरह किंग जेज़्स के ऑथोराइज़्ड वर्ज़न में दोनों बातों को रखा गया है; और रोमियों 16:1 में आधिकारिक पद *डीकन* को डालना कुछ अनुवादों में बिल्कुल गलत और भ्रमित करने वाला है।

यदि कलीसियाओं को महिला डीकन नियुज़्त करने की आज्ञा दी गई थी, तो यह कहां लिखा है, ज़्या नये नियम में या ऐतिहासिक कलीसिया की किसी रीति में इसका उल्लेख मिलता है ? यदि कहीं स्त्रियों को डीकन नियुज़्त किया जाता है तो वह नियुज़्ति बिना परमेश्वर के अधिकार के है और उनकी नियुज़्ति के लिए दिए गए दिशा निर्देशों के रूप में सेवा की योग्यताओं की सूची से मेल नहीं खाती। यदि आयत 11 को स्त्रियों को डीकन बनाने के लिए मापदण्ड के रूप में आधार बनाना है, तो यह पूछा जा सकता है, कि ज़्या पौलुस ने ऐल्डरों के लिए पन्द्रह योग्यताओं की और तथाकथित डीकनेसों अर्थात सेविकाओं के लिए चार योग्यताओं की सूची दी थी ? ऐसे दृष्टिकोण का स्पष्टतया कोई अर्थ नहीं है।

काम और प्रतिफल (आयत 13)

पौलुस की इस अभिव्यज़्ति पर कि डीकन "अच्छी" तरह सेवा करें, विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कुछ मामलों में डीकनों ने सेवकाई के साथ – साथ और भी काम किया। अंतिम निर्णय ऐल्डरों पर छोड़ देने चाहिए (यह मानते हुए कि वे परमेश्वर के वचन की अगुआई में चलेंगे)। ऐल्डरों से मिलना और ऐल्डरों को बहुमत के अधिकार से "मात देना" डीकनों के लिए शर्म की और पापपूर्ण बात है। ऐसा तीन गलतियों के कारण है: (1) ऐल्डर वैसे अध्यक्षता नहीं कर रहे होते जैसे उन्हें करनी चाहिए (इब्रानियों 13:17)। (2) डीकन उस तरह सेवा नहीं कर रहे होते जैसे उन्हें करनी चाहिए। (3) बहुमत का ढंग पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है, ज़्योंकि सबके लिए सहमत होना ज़रूरी है और छोटों को ऐल्डरों के अधीन होना चाहिए। सबसे बढ़कर, कलीसिया को उन सब बातों का पालन करना चाहिए जो मसीह ने सिखाई हैं (देखिए 1 कुरिन्थियों 1:10; 1 पतरस 5:5; मज़्ी 28:20)। यदि डीकन सही भी हों तो भी उन्हें चाहिए कि वे "सही होने" को बाइबल के मापदण्डों पर चलकर दिखाएं (1 तीमुथियुस 5:1, 19, 20; 1 पतरस 5:1–6)।

पौलुस की इस ताड़ना से कि डीकन "अच्छी" सेवा करें, निकलने वाली महानता पर ध्यान दें। कर्ज़व्य के प्रति समर्पित आदमी पूरा प्रयास करने में कोई कमी नहीं रहने देगा। एक समर्पित सेवक निर्देशों का अच्छी तरह पालन करने वाला होगा। वह निश्चय ही ईश्वरीय निर्देशों से कार्य करेगा। उसके पदचिह्नों के साथ कितनी प्रतिष्ठा होगी! इस सज़्बन्ध में स्मदरमैन की टिप्पणी है:

> प्रारज़्भिक मसीही समाज में बड़े व्यावहारिक ढंग से *डायाकोनिया* की समझ थी और हर आवश्यक सेवा को पूरा किया जाता था (प्रेरितों 4:35)। ... तीसरी शताज़्दी तक सेवा की गरिमा पर कम लेकिन डीकन के बिशप के अधीन होने पर अधिक ज़ोर दिया जाने लगा। यह सज़्भव है कि नया नियम जानबूझकर डीकन के कामों के बारे में अस्पष्ट है ताकि डीकन हर युग में समकालिक आवश्यकताओं के अनुसार सेवा कर सकें। ... नये नियम के चुप रहने से प्रारज़्भिक डीकनों को हर प्रकार से सेवा करने की अनुमति मिल गई जिसके लिए वे योग्य पाए गए थे और दी जाने वाली कोई भी सेवा कर सकते थे। आज के डीकनों का काम उनसे किसी ज़्ी प्रकार अलग नहीं है।[64]

समर्पित डीकनों द्वारा की गई ऐसी सेवा को न तो नज़रअन्दाज़ किया जाएगा और न ही वह प्रतिफल के बिना रहेगी। परमेश्वर ने कभी बड़ी आशिषों और प्रतिफल देने की पेशकश के बिना बड़े काम नहीं दिए। उसके प्रतिफल कई तरह के हैं: डीकन का स्वभाव अर्थात जो कुछ वह बनता है अर्थात सुन्दर, मनोहर, चौकसी रखने वाला, परिश्रम से ही हो सकता है। डीकन से "अच्छा पद" (3:13) अर्थात एक अच्छा आधार बन जाएगा। मण्डली उसके साथ काम

करके खुश होगी। डीकन को "विश्वास में बड़ा हियाव" भी मिल जाएगा (3:13)। अन्त में एक परिश्रमी डीकन को स्वर्ग में घर मिलेगा। ज़्या इससे अच्छी चीज़ मांगी जा सकती है?

आज कलीसिया को ऐसे सेवक अगुओं की आवश्यकता है जिनका वर्णन पौलुस ने किया है। भाइयों को इन महत्वपूर्ण विशेष सेवाओं के लिए तैयार करने के लिए सुसमाचार प्रचारक और मण्डलियां शिक्षा में कितना प्रयास कर रही हैं?

पाठ 9: कलीसिया के लिए सज़्भाल - एक निष्कर्ष (3:14, 15)

हमारा अपना बर्ताव कैसा हो (आयतें 14, 15क)

तीमुथियुस के नाम पत्री लिखने का पौलुस का उद्देश्य कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को यह समझाना था कि "किसी का अपना बर्ताव कैसा होना चाहिए।"[65] उचित बर्ताव सीखने के लिए पिछले व्यवहार को छोड़ना आवश्यक है। इसे हम "सुधार करना" या "आकार देना" कह सकते हैं। नई सृष्टि बनकर लोग मसीह में *परिवर्तित हो जाते हैं* (2 कुरिन्थियों 5:17)। बिना कुछ उलट पुलट किए, कुछ सामर्थ और साहस दिखाए, कुछ शुद्धता और पवित्रता बनाए जिससे परमेश्वर के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ोतरी हो, मसीह में बड़े - बड़े ऐल्डर और डीकन नहीं बन सकते (2 पतरस 3:18; 2 तीमुथियुस 1:7; 2:1)।

कलीसिया को कैसे देखें (आयत 15ख)

हमारे व्यवहार पर पौलुस के इस ज़ोर से ध्यान आकर्षित कर दिया जाता है कि हमें "जीवते परमेश्वर की कलीसिया" में रहना है। जीवता परमेश्वर मृत बच्चों को जन्म नहीं देता या उन्हें निष्क्रिय, उदासीन संतान नहीं बनाता! *जीवते* परमेश्वर के साथ हमारा सज़्बन्ध ही सही व्यवहार में हमारे अपने आचरण की कुंजी है (मज़्ी 5:48; फिलिप्पियों 2:22; 1 यूहन्ना 3:1–3)। मसीह की कलीसिया के प्रति हमारा दृष्टिकोण उसके प्रति हमारे आचरण से ही पता चलता है।

सत्य का खज़्भा

निस्संदेह तीमुथियुस को सत्य के खज़्भे के रूप में मसीही लोगों (अर्थात कलीसिया) के बारे में पौलुस की अलंकारिक भाषा को समझना कठिन नहीं था। प्रकाशितवाज़्य 19:6–8; मज़्ी 5:16; 2 तीमुथियुस 2:19; 1 तीमुथियुयस 6:20; और तीतुस 2:10–14 जैसी आयतें स्पष्ट करती हैं कि परमेश्वर के लोग शिक्षा या सत्य (अर्थात "हमारे उद्धारकर्ज़ा परमेश्वर के उपदेश को शोभा" देना; तीतुस 2:10) की सजावट कैसे कर सकते हैं। *खज़्भों* के रूप में हमारा काम कर सकना विशेष तौर पर उस स्थिति से मेल खाएगा जहां यह पत्री पाने के समय तीतुस था। तीमुथियुस को यह पत्री इफिसुस में मिली थी (1:3), जो अरतमिस या डायना के मन्दिर का स्थान था (प्रेरितों 19:28)। बार्कले का इस सज़्बन्ध में कहना है:

> वह मन्दिर संसार के सात अजूबों में से एक था। उस मन्दिर की एक विशेषता

इसके स्तम्भ थे। इसमें एक सौ सताइस स्तम्भ थे, हर स्तम्भ राजा का उपहार था। सभी स्तम्भ संगमरमर के बने थे और उनमें से कइयों में मोती और सोना जड़ा हुआ था। इफिसुस के लोगों को मालूम था कि कोई स्तम्भ कितना सुन्दर हो सकता है। ऐसा हो सकता है कि यहां प्रयुक्त शब्द *स्तम्भ* या खम्भे के विचार को इतना *समर्थन* न हो, जो *प्रदर्शन* की तरह प्रोत्साहन में मिलता है। आम तौर पर किसी प्रसिद्ध आदमी की मूर्ति को किसी खम्भे के ऊपर लगा दिया जाता है जिससे यह दूसरी आम चीज़ों से सबसे ऊपर हो और दूर से भी साफ दिखाई दे सके। यहां पर विचार यह है कि कलीसिया की ज़िम्मेदारी सच्चाई को इस प्रकार सम्भालकर रखने की है कि सब लोग इसे देख सकें। सच्चाई को दिखाना और प्रमाणित करना कलीसिया की ज़िम्मेदारी है।[66]

सत्य की नेंव

यदि ''खम्भा'' होने का विचार कलीसिया के शिक्षा से सुसज्जित होने के लिए है, तो अगला वाक्यांश ''सत्य की नेंव'' के रूप में कलीसिया के शिक्षा की रक्षा करने के लिए है। RSV में ''नेंव'' शब्द की जगह ''बुलवर्क'' अर्थात रक्षात्मक आड़ है। इससे सदस्यों की ज़िम्मेदारी अधिक स्पष्टता से देखी जा सकती है। मसीही लोगों को सत्य की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी दी गई है (1 तीमुथियुस 6:20, 21; 2 तीमुथियुस 1:14)। यह रक्षा इस भय के कारण नहीं है कि सत्य स्थिर नहीं रह सकता या नष्ट हो जाएगा (देखिए मत्ती 24:35) बल्कि इस कारण है क्योंकि झूठे भविष्यवक्ता और शिक्षक इसका दुरुपयोग करेंगे (देखिए 2 तीमुथियुस 3:2–13; रोमियों 16:17, 18; 2 पतरस 2:1–3)। किसी बैंक लुटेरे से हम धन को नष्ट करने की अपेक्षा करते हैं या हमारी चिंता उसके द्वारा इसके इस्तेमाल के ढंग को लेकर होती है? मसीही लोगों को इस बात का भय नहीं होना चाहिए कि मनुष्य या शैतान सत्य को नष्ट कर सकता है। बल्कि हमें इसके गलत इस्तेमाल या दुरुपयोग को रोकना चाहिए। अगली पीढ़ी के सुनने और विश्वास करने के लिए परमेश्वर का *बहुमूल्य सत्य* सम्भालकर शुद्ध रखा जाना चाहिए।

क्योंकि प्रभु ने मिट्टी के बर्तनों में अपना धन रखा है (2 कुरिन्थियों 4:1–7), इसलिए हमें अज्ञानी और चंचल लोगों से जो अपने और सुनने वालों के विनाश के लिए पवित्र शास्त्र को तोड़े मरोड़ेंगे (2 पतरस 3:16–18; रोमियों 16:17, 18) इसकी रक्षा करनी चाहिए (2 तीमुथियुस 1:13, 14)।

क्योंकि मसीह वह नींव है जिस पर कलीसिया बनी है (1 कुरिन्थियों 3:10, 11), इसलिए कलीसिया के सदस्य खम्भे और बुर्ज हैं। हमारे लिए यह दिखाना कि क्या सही है और सब लोगों को सत्य पर विश्वास करने और इसकी बात मानने का कारण समझाना आवश्यक है (इफिसियों 3:1–12, विशेषकर 8–10 आयतें)।

कलीसिया का आत्मविश्वास (आयत 16)

अध्याय 3 में दी गई हर ताड़ना को सही ठहराते हुए आयत 16 में पौलुस चरम पर

पहुंच गया। मसीह की कलीसिया के रूप में हम जो कुछ भी बनते या करते हैं वह उस बड़े भेद के कारण ही है जो प्रकट किया गया है। मसीह में केन्द्रित, तथा प्रकट किया गया भेद ईश्वरीय सुन्दरता तथा आशिषों के आत्मविश्वास का स्वर सुनाता है। उस भेंट की महज़्ा या महानता, जिसके द्वारा पापियों में भज़्ति होनी सज़्भव होती है, का कोई मुकाबला नहीं है। जैसे पौलुस लिखता है, ''इसमें संदेह नहीं'' कि इस बड़े भेद का प्रचार किया गया है।[67] इसलिए आयत 16 कलीसिया के लिए सत्य की रक्षा करने का कारण बन जाती है। अब यह भेद नहीं रह गया (इफिसियों 3:3-6; रोमियों 16:25-27)। 3:9 में पौलुस ने विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखने के लिए कहा है। जब तक हमें यह पता न हो कि हमारे पास ज़्या है तब तक हम इसे सज़्भाल नहीं सकते। हम *तो* जानते हैं कि हमारे पास एक बहुमूल्य योजना है जो हमें बताई गई है और जिसे पौलुस ने आयत 16 में ''गंभीर'' कहा![68] परमेश्वर के भेद का जो अब भेद नहीं रहा, कार्यक्षेत्र, महत्व और पवित्रता बहुत है। पौलुस ने इसकी गंभीरता को महत्व देने के कई कारण बताए:

1. *परमेश्वर का बड़ा उपहार: वह आया।* ''जो शरीर में प्रकट हुआ था'' (यूहन्ना 1:1-4, 14; 3:16; गलतियों 4:4; फिलिप्पियों 2:5-8)।

2. *एक बड़ी गवाही: उसे ग्रहण किया गया।* यीशु मसीह ''आत्मा में निर्दोष ठहरा''[69] (यूहन्ना 16:7-14; लूका 24:45-49; प्रेरितों 1:5-8; 2:1-4, 15-24, 29-41; रोमियों 1:4; 8:11)। धर्मी ठहरने की बात यहां किसी बुराई की क्षमा के अर्थ में नहीं है (ज़्योंकि यीशु ने कोई बुराई नहीं की थी), बल्कि मनुष्य द्वारा न्याय को स्वीकार करने में असफल होने के अर्थ में की गई है (यशायाह 53:4-8; प्रेरितों 8:28-39; 1 पतरस 2:21-25)।

3. *गंभीर श्रोतागण: वह सराहा गया।* मसीह ''स्वर्गदूतों को दिखाई दिया'' (1 पतरस 1:10-13; इफिसियों 4:8-10; भजन संहिता 68:17-19; फिलिप्पियों 2:9, 10; प्रकाशितवाज़्य 5:11, 12)। स्वर्ग में उसकी महिमा हुई!

4. *एक गंभीर कहानी और क्षेत्र: उसकी जय जयकार हुई।* मसीह का ''अन्यजातियों में प्रचार हुआ'' (मज़्ी 28:18-20; प्रेरितों 1:8; कुलुस्सियों 1:23; प्रकाशितवाज़्य 1:7; मज़्ी 25:31-46)।

5. *एक बड़ा प्रत्युज़्ार: उसे ग्रहण किया गया।* ''जगत में [मसीह] पर विश्वास किया गया'' (1 पतरस 1:18-23; प्रेरितों 2:41; 5:14; 9:31; रोमिया 15:18, 19; 16:25-27; फिलिप्पियों 2:9-11)।

6. *एक बड़ी स्थिति: वह ऊंचा उठाया गया।* मसीह ''महिमा में ऊपर उठाया गया'' (प्रेरितों 1:9-11; इब्रानियों 2:9; इफिसियों 1:18-23; यूहन्ना 17:5; प्रकाशितवाज़्य 5:6-14)।

इस कहानी (भेद) का हर चरण जो हमारे प्रभु यीशु मसीह पर केन्द्रित है, *गंभीर* है। विचार करें कि यीशु कौन है और उसने ज़्या किया है। परमेश्वर का भेद हम पर जीवते परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में बड़े वास्तविक ढंग से प्रकट किया गया है!

निम्न शब्द परमेश्वर की महानता और उसके प्रकट किए हुए भेद को बताने के लिए एक उपयुक्त निष्कर्ष के रूप में काम करते हैं:

> इसे सर्वश्रेष्ठ और सर्वशक्तिमान प्रेम के बड़े मूल सिद्धांत के रूप में माना जाता है, और ज़ोरदार ढंग से "परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता के मानव प्रेम" का नाम दिया जाता है जो धर्म और अनुग्रह के सूर्य के पूर्ण चक्र से चमकने वाला है जो सब घटनाओं में सबसे बड़ा और सम्पूर्ण है; परमेश्वर की सारी सृष्टि के एकमात्र राजा के रूप में, पूर्ण प्रभुसत्ता के साथ प्रभु यीशु का अभिषेक ... मनुष्यों में इसे "सृष्टि में क्रांति" कहा जाएगा; परन्तु यह शब्द पूरी तरह से अनुपयुक्त है। वास्तव में यह अनन्तकाल में एक बहुत बड़ा काल अर्थात नया युग अर्थात "युगों की पूर्णता" है। ... सृष्टि के शासक के रूप में, यीशु का यह अभिषेक, सचमुच सबसे बड़ी, भव्य और महत्वपूर्ण घटना थी।[70]

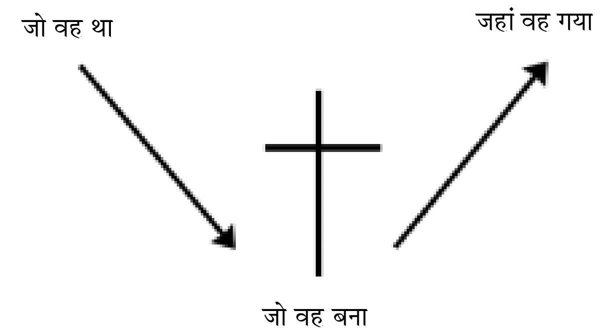

अब हमें उसकी श्रेष्ठतम महानता का पता है (आयत 16)!

पाद टिप्पणियां

[1]सुसमाचार प्रचारकों अर्थात इवेंजलिस्टों को चाहिए कि पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाने पर पौलुस और बरनबास द्वारा किए काम पर ध्यान दें (प्रेरितों 13:1-3)। उन्होंने अपना काम केवल जाकर और सुसमाचार का प्रचार करके ही पूरा नहीं किया। उनका काम जाकर, सुसमाचार का प्रचार करके, और विश्वास करने वालों को बपतिस्मा देने से ही पूरा नहीं हुआ। उनका काम जाकर, प्रचार करके, विश्वास करने वालों को बपतिस्मा देकर और मण्डलियां स्थापित करके पूरा नहीं हुआ। उनका काम तभी पूरा हुआ जब उन्होंने प्रचार किया, विश्वास करने वालों को बपतिस्मा दिया, मण्डलियों को स्थापित किया, *और प्रत्येक कलीसिया के लिए प्रचीन या ऐल्डर ठहराए।* (देखिए प्रेरितों 14:23, 26)। सुसमाचार सुनाने वाले प्राय: जाकर प्रचार करके ही संतुष्ट हो जाते हैं। उन्हें ऐसे ही सिखाया गया था, और वे ऐसे ही सेवा करते हैं। जिस कारण, संसार भर में बहुत सी मण्डलियां ऐसी हैं जिनमें प्रभु का काम अभी भी पूरा नहीं हुआ है (देखिए तीतुस 1:5)। [2]चाहना (यू.: *orego*) –

''किसी वस्तु को छूने या पकड़ने के लिए आगे बढ़ना, किसी चीज़ के पीछे जाना या उसकी इच्छा करना'' (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक – इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एण्ड टी. क़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 452)। [3]''अध्यक्ष'' के लिए शब्द *episkopos* की परिभाषा ''ओवरसियर अर्थात ऐसे व्यक्ति के रूप में की जाती है जिसे यह ध्यान रखने की जिम्मेदारी दी गई है कि दूसरों द्वारा किया जाने वाला काम सही ढंग से हो, जैसे संग्रहालय का कोई अध्यक्ष, अभिभावक या निरीक्षक'' (थेयर, 243)। [4]इच्छा करना (यू.: *epithumeo*) ''मन लगाना, चाहना, लालच करना, लोभ करना'' (जी. एज़्बट – स्मिथ, *ए मैनुअल ग्रीक – लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एण्ड टी. क़्लार्क, 1948], 170)। [5]हो (यू.: *dei*, अन्य पुरुष एकवचन से *deo*, वर्तमान आज्ञाबोधक)। आज्ञाबोधक इसे एक *आवश्यक* बना देता है; *deo* का अर्थ है ''बांधना, गांठ देना, जकड़ना ... व्यवस्था, कर्त्तव्य के बंधन में रखना'' (थेयर, 131)। [6]निर्दोष (यू.: *anepileptos*) ''... गिरफ़्तार न किया गया हो, ... जिसकी निन्दा न होती हो अर्थात निष्कलंक हो'' (थेयर, 44); ''दोषरहित, अनिन्दनीय'' (एड्वर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 54)। [7]पियक्कड़ (यू.: *me paroinos*) – ''पीने का आदी, शराबी ... मय पीकर झगड़ने वाला; जिस कारण झगड़ा और गाली गलौज हो जाए'' (थेयर, 490); ''शराब से, ... मय से या मय पर होने वाली बात, रंगरलियां ... पीने की धुन ... देर तक पीते रहना, नशे में धुत होना'' (रोबिन्सन, 558)। [8]जे. डब्ल्यू. मैक़्गर्वे, *ए ट्रीटाइज़ ऑन द ऐल्डरशिप* (पृ.न.: 1870; रीप्रिंट, मरफ्रीसबोरो, टैनिसी: डिहॉफ पब्लिकेशन्स, 1950), 61. [9]मारपीट करने वाला (यू.: *plektes*) – ''... मुक्केबाज, मारा – मारी पर उतारू; ... कलहप्रिय, झगड़ालू व्यक्ति'' (थेयर, 516–17); ''... पीटने को तैयार, झगड़ा करने वाला'' (रोबिन्सन, 589)। [10]न झगड़ालू (यू.: *amachos*) – कर्मवाच्य: ''जिसके साथ झगड़ा न हुआ हो, जिस पर विजय न पाई जा सके ...''; कर्तृवाचक: ''न झगड़ने वाला। ...''; अतिशयबोधक: ''कलहप्रिय नहीं, झगड़ालू नहीं'' (रोबिन्सन, 36)।

[11]*वेबस्टर'स अनअब्रिजड डिक्शनरी,* 1983 संस्क., s.v. ''contentious.'' [12]प्रथम तीन नकारात्मक वाक्यांशों की समानता पर ध्यान दें। क्या ऐसा व्यक्ति गाली गलौज करने वाला और झगड़ा बढ़ाने वाला होगा? क्या ऐसा व्यक्ति दबाव से नरम पड़ सकता है? [13]न लोभी (यू.: *aphilarguron*) – ''धन से प्रेम करने वाला न हो, लालची न हो'' (थेयर, 89); ''लोभी न हो'' (रोबिन्सन, 113)। [14]नया चेला (यू.: *neophutos* ''... नया – नया बना, ... नौसिखिया ... नवदीक्षित व्यक्ति ... जो हाल ही में मसीही बना हो'' (थेयर, 424)। [15]हठी (यू.: *authades*) – ''अपने आप को प्रसन्न करने वाला, दुराग्रही, ढीठ'' (थेयर, 83); ''... आत्मसंतुष्ट; ... ज़िद्दी'' (रोबिन्सन, 106)। [16]क्रोधी (यू.: *orgilos*) – ''क्रोध करने वाला, चिड़चिड़ा'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक – इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ड्ट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957], 583); ''क्रोध करने को उन्मुख, उग्र'' (थेयर, 452)। [17]एक ही पत्नी का पति (यू.: *mias gunaikos andra*) – मूलतः, ''एक स्त्री का पुरुष।'' [18]जे. डब्ल्यू. मैक़्गर्वे, ''चर्च गवर्नमेंट,'' *द मिज़ोरी क्रिश्चियन लेक्चर्स, 1889–91* (सेंट लुइस: क्रिश्चियन पब्लिशिंग कं., 1892), 191. [19]इन बातों पर निर्णय सुसंगत होने चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि किसी ऐल्डर की पत्नी की मृत्यु हो जाए तो क्या उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए? क्या इससे उसकी योग्यता कम हो जाती है? क्या उसके काम में (विशेषतया परामर्श देने की परिस्थितियों में) बाधा आएगी? यदि किसी में योग्यता तो हो पर उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाए तो क्या उसे ऐल्डर नियुक्त किया जा सकता है? यदि ऐल्डर की पत्नी जीवित हो परन्तु उसके दोनों विश्वासी बच्चों की मृत्यु हो जाए तो क्या अब उसमें योग्यता नहीं रही? यदि उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाए और मण्डली को लगे कि उसे अपने पद से त्यागपत्र दे देना चाहिए, तो क्या उसके लिए सेवा जारी रखने के अपने अधिकार पर ज़ोर देना समझदारी होगी? [20]संयमी (यू.: *nephalios*) – ''... गंभीर, ... मय से पूरी तरह ... या कम से कम इसके अत्यधिक सेवन से परहेज़ करने वाला'' (थेयर, 425); ''... मर्यादा में रहने वाला, चौकस, सावधान'' (रोबिन्सन, 480)।

[21]सुशील (यू.: *sophron*) – ''... स्वस्थ मन वाला, विवेकशील, अपनी इच्छाओं और भावनाओं को काबू में रखने वाला, आत्मनियन्त्रित, संयमी'' (थेयर, 613); ''ठोस तर्क को मानने वाला और अपनी भावनाओं को काबू में रखने वाला ... संयमी, संतुलित अर्थात मन, इच्छाओं, भावनाओं को संतुलन में और अच्छी तरह रखने वाला'' (रोबिन्सन, 707)। [22]सज्य (यू.: *kosmios*) – ''नैतिक सज़्मान में सुव्यवस्थित, शिष्ट, मर्यादित'' (रोबिन्सन, 409); ''अनुशासित, शोभनीय ... शिष्टाचार, अनुशासित जीवन जीने वाला व्यज़्ति'' (थेयर, 356)। [23]पहुनाई करने वाला (यू.: *philoxenos*) – ''अतिथियों के प्रति उदार, मेहमाननवाज़'' (थेयर, 654); ''परदेशियों से प्रेम करने वाला'' (रोबिन्सन, 763)। [24]ओटो फोस्टर, *सक्रिप्चरल गवर्नमेंट ऑफ़ द चर्च* (डिलाइट, आरकेन्सा: गॉस्पल लाइट पज़्लिशिंग कं., 1948), 16–17. [25]सिखाने में निपुण (यू.: *didaktikos*) – ''सिखाने में निपुण और तैयार ... जिस गुण से कोई सिखाने के योग्य बनता है'' (थेयर, 144)। [26]मैज़्गर्वे, ''चर्च गवर्नमेंट,'' 193. [27]कोमल (यू.: *epieikes*) – ''शोभनीय, योग्य ... न्यायसंगत, निष्कलंक, मृदु'' (थेयर, 238)। [28]घर (यू.: *oikou,* जो *oikos* का सज़्बन्ध कारक एकवचन है) – ''मकान ... कोई भी निवास स्थान ... जहां किसी ने अपना निवास बना लिया हो, किसी का बसा हुआ निवास स्थान, वास स्थान ... मकान में रहने वाले, एक परिवार के सभी लोग, घराना ... एक व्यज़्ति की संतान'' (थेयर, 441)। [29]प्रबन्ध (यू.: *proistamenon* जो *proistemi* का वर्तमान मध्यवर्ती कृदंत है) – ''के ऊपर होना, संचालन करना, ... किसी भी चीज़ को सज़्भालना, परिश्रमी होना, अज़्यास करना, बनाए रखना'' (रोबिन्सन, 620); ''रक्षक या सरपरस्त होना ... की संभाल करना, की ओर ध्यान देना'' (थेयर, 539)। [30]अधीनता (यू.: *hupotage, hupotasso* से 2 अनिश्चित भूतकाल क्रियारूप कर्मवाच्य) – यह तथ्य कि यह कर्मवाच्य है अपने से ऊपर अपने आदर्श की बात मानने का संकेत देता है; ध्यान दें इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21. शज़्द का अर्थ ही ''प्रबन्ध करना या अधीन करना ... मातहत करना, अधीन बनाना; ... अधीन होना ... आज्ञाकारी होना'' है (रोबिन्सन, 752); ''किसी के नियन्त्रण में होना; किसी के उपदेश या नसीहत को मान लेना'' (थेयर, 645)।

[31]गंभीरता (यू.: *semnotes*) – ''... गंभीरता, शांत, पवित्रता ... सज़्मान, ईमानदारी, शुद्धता'' (थेयर, 573)। [32]थेयर, 511. नये नियम में मसीह में आने के लिए सुसमाचार की आज्ञा मानने वालों के साथ सज़्बन्ध जोड़ने के लिए इस शज़्द का इस्तेमाल बार–बार हुआ है (प्रेरितों 4:4; 15:9)। ऐसा विश्वास बपतिस्मे और फिर आज्ञा मानने तक ले जाता है (प्रेरितों 2:37–42, 47; 5:14)। [33]दुराचार (यू.: *asotia*) – ''विलासिता, रंगरलियां, दंगा'' (रोबिन्सन, 104); ''... ठुकराए हुए आदमी की बात, जिसका उद्धार न हो सकता हो ... असुधार्य ... त्यागा हुआ कामुक, जीवन; भ्रष्ट चरित्रता, फिजूल खर्ची'' (थेयर, 82)। [34]विद्रोही (यू.: *anupotaktos*) – ''जिसे नियन्त्रण में नहीं रखा जा सकता, अवज्ञाकारी, बेलगाम, ज़िद्दी'' (थेयर, 52)। [35]इस प्रश्न की अधिक विस्तार से सज़्पूर्ण चर्चा डेयटन कीसी की पुस्तिका *ए री – इवेलुएशन ऑफ़ द ऐल्डरशिप* (अबिलेन, टैज़्सस: ज़्वालिटी पज़्लिकेशन्स, 1967), 30–36 में मिलती है। [36]सुनाम (यू.: *marturia*) – ''एक नैतिक अर्थ में जो किसी के चरित्र की साक्षी के विषय में सिद्ध होता हो'' (थेयर, 391)। [37]फोस्टर, 22. [38]भलाई का चाहने वाला (यू.: *philagathon*)– ''... भलाई प्रिय'' (थेयर, 653); ''... भलाई, उचित बात को पसन्द करने वाला'' (रोबिन्सन, 761)। [39]न्यायी (यू.: *dikaios*) – ''जिसका जो बनता हो वह देना ... दूसरों का निष्पक्ष न्याय करना, शज़्दों से या उनके साथ व्यवहार दिखाकर'' (थेयर, 149); ''... न्यायपूर्ण ढंग से, जैसा होना चाहिए, उचित न्याय करना'' (रोबिन्सन, 185)। [40]पवित्र (यू.: *hosios*) – ''... जो पाप से दूषित न हो, बुराई से रहित हो, हर नैतिक ज़िज़्मेदारी को धार्मिक तौर पर पूरा करने वाला, शुद्ध, पवित्र, धार्मिक'' (थेयर, 456)।

[41]जितेन्द्रिय (यू.: *egkrates*) – ''वश में लाना, नियन्त्रण करना, वश में करना, रोकना ... अपने ऊपर काबू रखना, संयम, आत्मसंयमी'' (थेयर, 167)। [42]फोस्टर, 26. [43]ए. एल. डैवनी, *द चर्च ऐल्डर्स* (ऑस्टिन, टैज़्सस: प्रैस ऑफ़ वॉन बोकमैन – जोनस कं., 1941), 48. [44]ऐल्डरों की भूमिका पर और जानकारी कीसी, *ए री – इवेलुएशन ऑफ़ द ऐल्डरशिप,* 11–24 में दी गई है। [45]रॉन डी. स्मदरमैन, ''डीकन्स' वर्क ऐज़

रिज़्लेज़्टज इन द अरली चर्च," *क्रिश्चियन बाइबल टीचर* (जुलाई 1974): 284. [46]डीकन (यू.: *diakonoi*) – "सेवा के लिए स्मदरमैन ने अन्य यूनानी शज़्दों से *डायाकोनिया* को प्रेम के कारण अर्थात स्वेच्छा से की जाने वाली सेवा के रूप में अलग किया" (स्मदरमैन, 284)। [47]गंभीर (यू.: *semnos*) – "श्रद्धेय, पूजनीय, सज़्माननीय, ... गंभीर, विचारणीय" (एज़्बट – स्मिथ, 404); "चरित्र के लिए सज़्माननीय, आदरणीय होना" (थेयर, 573); "लोगों में आदरणीय, सज़्माननीय, गंभीर, प्रतिष्ठित" (रोबिन्सन, 659)। [48]दो रंगी (यू.: *me dilogous,* जो *dilogos* से निकला है) – "... एक ही बात को दो बार कहने, दोहराने वाला... दो ज़बाना, एक व्यज़्ति से कुछ कहना और दूसरे से कुछ और (धोखा देने के उद्देश्य से)" (थेयर, 152); "... कहना कुछ और उसका अर्थ कुछ और होना" (रोबिन्सन, 186)। [49]पियज़्कड़ नहीं (यू.: *me oino pollo prosechontas*) – मूलत: "मय पर समय लगाने [या लगा रहने] वाला नहीं।" यह इस कार्य के पीछे के विचार के कार्य के आगे जा सकता है ज़्योंकि यूनानी शज़्द प्रोसिको (*prosecho*) में भी "की ओर अपना मन मोड़ने" का विचार मिलता है (एज़्बट – स्मिथ, 385)। [50]नीच कमाई (यू.: *me aischrokerdeis*) – "अनुपयुज़्त लाभ पाने को उत्सुक" (रोबिन्सन, 18–19); "खोटी कमाई पाने को उत्सुक, धन का लोभी" (थेयर, 17)।

[51]भेद (यू.: *musterion*) – "सुसमाचार, मसीही काल का भेद, जो प्राचीन समय से गुप्त था और अंतिम समयों में सर्वप्रथम प्रकट किया गया" (रोबिन्सन, 473–74); "मसीह के द्वारा मनुष्य के उद्धार की परमेश्वर की योजना, जो पहले गुप्त थी लेकिन अब प्रकट कर दी गई है" (थेयर, 420)। [52]विवेक (यू.: *suneidesis*) – "अच्छाई और बुराई में अन्तर करने वाले के रूप में मन जो अच्छाई करने को उकसाता और बुराई से मना करता है, अच्छाई की प्रशंसा करता और बुराई की निन्दा; ..." (थेयर, 602)। [53]ए. टी. रॉबर्टसन, *वर्ड पिज़्चर्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 4 (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1932), 574. [54]निर्दोष (यू.: *anegkletos*) – "... जिसे हिसाब देने के लिए बुलाया न जा सकता हो, अनिंदनीय, जिससे घृणा न की जा सकती हो, जिस पर आरोप न लगता हो, दोषमुज़्त" (थेयर, 44)। [55]परखना (यू.: *dokimazesthosan,* वर्तमान आज्ञाबोधक, कर्मवाच्य, *dokimazo* का अन्य पुरुष बहुवचन) – यह तथ्य कि यह एक आज्ञाबोधक है इस बात पर ज़ोर देता है कि यह "परखा जाना" गंभीरता से हो। *डोकिमेज़ो* का अर्थ "जांच करना, ... परीक्षा करना ... जैसे आग से ... जांचने, अन्तर करने, पसन्द करने, परख करने के लिए" (रोबिन्सन, 188)। [56]प्रबन्ध (यू.: *proistemi*) – "के ऊपर होना, संचालन करना, ... किसी भी चीज़ को सज़्भालना, परिश्रमी होना, अज़्यास करना, बनाए रखना" (रोबिन्सन, 620); "रक्षक या सरपरस्त होना ... की संभाल करना, की ओर ध्यान देना" (थेयर, 539)। [57]अच्छा (यू.: *kalos*) – "... सुन्दरता से, ... अच्छी तरह, सही ढंग से, ताकि दोष लगाने का मौका न मिले; आदरणीय ढंग से, सज़्मानपूर्वक" (थेयर, 323)। [58]स्त्रियां (यू.: *gunaikas,* गुने *gune*) से लिया गया कर्मकारक बहुवचन – "... किसी भी उम्र की महिला, कुंवारी हो या विवाहित या विधवा हो ... या पत्नी [देखिए 1 कुरिं. 7:3, 10, 13] ... सगाई की हुई स्त्री [देखिए मज़्ती 1:20, 24]" (थेयर, 123)। [59]दोष लगाना (यू.: *me diabolous*) – "बदनामी करने का आदी, ... झूठा आरोप लगाना" (थेयर, 135); "बदनाम करने वाला, आरोप लगाने वाला, निन्दा करने वाला" (रोबिन्सन, 168)। [60]रॉबर्टसन, 575.

[61]गंभीर (यू.: *nephalios;* एज़्बट–स्मिथ) – "... गंभीर, ... मय से बिल्कुल ... या कम से कम इसके अत्यधिक सेवन से परहेज़ करने वाला" (थेयर, 425); "... मर्यादा में रहने वाला, चौकस, सावधान" (रोबिन्सन, 480)। [62]जेज़्स बर्टन कॉफ़मैन, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियंस, 1 एण्ड 2 तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन* (ऑस्टिन, टैज़्सस: फर्म फाउंडेशन पज़्लिशिंग हाउस, 1978), 182–84. [63]*द पुलपिट कमैंट्री,* सं. एच. डी. एम. स्पैंस एण्ड जोसेफ एस. एज़्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं. 1950), 21:53 में ए. सी. हार्वे, "1 तिमोथी।"[64]स्मदरमैन, 284–85. [65]बर्ताव (यू.: *anastrepho*) – "... उलट देना, क्रांति ... व्यवहार करना, ... परमेश्वर के घर में, ... निश्चित सिद्धांतों को पूरा करने के अर्थ में ... सामर्थ और साहस का बर्ताव करना, 1 तीमु. 3:15 ... पवित्रता में शुद्ध मन से रहना, ..." (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 60–61)। [66]विलियम बार्कले, *द लेटर्स टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन* द डेली स्टडी बाइबल

सीरीज़, संशो. संस्क. (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1960), 102–3. [67]संदेह नहीं (यू.: *omologoumenos*) – ''सबकी स्वीकृति से, मानने से, बिना विवाद के'' (थेयर, 446)। [68]गंभीर (यू.: *megas*) – ''... बड़ा ... बहुतायत में ... प्राकृतिक घटनाओं का मन पर गहरा असर होना ... देखने वाली चीज़ें जो सराहना और आश्चर्य के लिए विवश करती हैं ... जैसे योग्यता, गुण, अधिकार, सामर्थ वाले व्यक्तियों के सज़्बन्ध में ... यीशु अर्थात मसीह के वैभवशाली व्यक्तित्व की बातों की ... और उसका सर्वोज़म प्रभाव ... वस्तुओं का उनके महत्व के लिए अत्यधिक मान ... बड़े स्तर पर तैयार किया गया'' (थेयर, 594–95)। [69]शरीर में मसीह के प्रगट होने और आत्मा में ऊंचा उठाए जाने के विषय में, विलियम हैंडरिज़्सन का कहना है, '' 'शरीर' और 'आत्मा' का मेल पवित्र शास्त्र की आज्ञा के अनुसार है। ध्यान दें: 'और वचन *देहधारी* हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के इकलौते की महिमा। ... और यूहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैंने *आत्मा* को कबूतर की नाईं आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया' (यूह. 1:14, 32; तु. 3:34)। पवित्र आत्मा से इस प्रकार अभिषिज़्त होकर (भ.सं. 2:2; 45:7; मज़ी 3:16; मर. 1:10; लू. 3:22; प्रेरितों 4:27; 10:38), वह 'देहधारी' (निर्बल मानवीय स्वभाव) होने पर, आश्चर्यकर्म करने, दुष्टात्माओं को निकालने आदि में सक्षम था (मज़ी 12:28)। सामर्थ के हर प्रकार के काम के कारण उसका *न्याय* पज़्का हुआ था, ज़्योंकि निश्चय ही पवित्र आत्मा ने किसी पापी को ऐसी सामर्थ नहीं देनी थी (यूह. 9:31)। परन्तु विशेष तौर पर *मृतकों में से जी उठने* के द्वारा ही आत्मा ने यीशु के दावे की *पूरी तरह से* पुष्टि की थी कि वह परमेश्वर का पुत्र है (रोमि. 1:4)'' (विलियम हैंड्रिज़्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* [लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964], 140)। [70]अलेग्ज़ेन्डर कैज़्पबैल, ''जस्टिफिकेशन एण्ड कोरोनेशन ऑफ़ द मसायाह,'' *ए कलैज़्शन ऑफ़ ओरिजनल सरमंज़* (लुइसविल्ले, कैन्टकी: मोर्टन एण्ड ग्रिसवोल्ड, 1851), 438.